

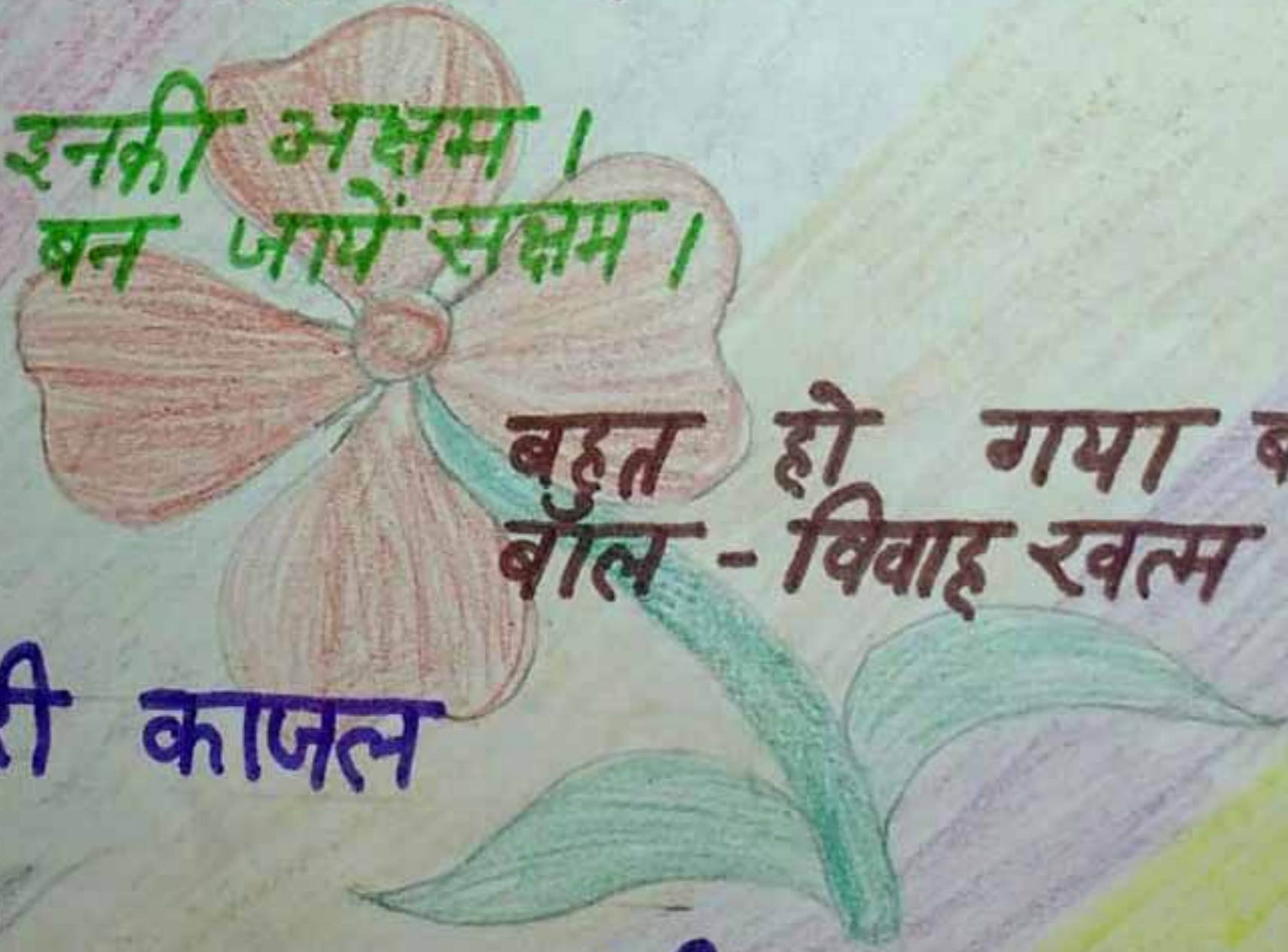
# बाल विवाह पर कविता

नन्हें खेलों परों को उड़ने दो।  
खेलों खाये और पढ़ने दो।



अभी न जकड़े बंधन में।  
बाल-विवाह के प्रचलन में।

अभी उच्च हैं इनकी अक्षम।  
पढ़ने-लिखकर बन जायें सक्षम।



बहुत हो गया बंद करो।  
बाल-विवाह खत्म करो।

नाम-कुमारी काजल

कक्षा- 7

आवासीय बालिका कस्तूरबा गोंधी  
विद्यालय  
खपुरी काराण इलाहाबाद।